Table of Contents

1. [illegible]
2. [illegible]

[illegible]

[illegible] 6 [illegible] 1861 [illegible] [illegible] [illegible]



□□□□□ □□□□□

- □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□
- □□□-□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□
- □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□
- □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□
- □□□□□□ □□□□□□□: □□□□□□□□, □□□□□□□, □□□□□, □□□□□, □□□□□□□□□□, □□□□ □□□

□□□□□ □□□□□□

"[illegible] [illegible] [illegible] [

करें ताकि वे स्वयं अपने संघर्षों का सामना कर सकें। कवि यह चाहते हैं कि वे भयभीत न हों और अपने दुःखों पर विजय प्राप्त करें।

कविता में यह भाव स्पष्ट है कि जीवन में आने वाली कठिनाइयों से बचना नहीं चाहिए, बल्कि उनका सामना स्वयं करना चाहिए। कवि प्रभु से केवल इतना चाहते हैं कि वे उन्हें तरने की शक्ति दें, न कि भार कम करें।

मुख्य बिंदु

- प्रभु से आत्मबल की प्रार्थना
- विपदाओं से बचाव नहीं, बल्कि सामना करने की शक्ति
- दुःखों पर विजय पाने की इच्छा
- स्वयं पर निर्भर रहने का संदेश

Prepzy

पाठ्य प्रमाण

"विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं
केवल इतना हो (करुणामय)
कभी न विपदा में पाऊँ भय।"

हल किए गए उदाहरण

प्रश्न: कवि "आत्मत्राण" में प्रभु से क्या चाहते हैं?
उत्तर: कवि चाहते हैं कि प्रभु उन्हें विपदाओं से बचाने के बजाय आत्मबल दें ताकि वे स्वयं अपने दुःखों और कठिनाइयों का सामना कर सकें। वे चाहते हैं कि उन्हें डर न लगे और वे निर्भय होकर जीवन की चुनौतियों से लड़ सकें।

अभ्यास प्रश्न

- कवि "आत्मत्राण" में किस प्रकार की सहायता की कामना करते हैं?
- कविता में विपदाओं के प्रति कवि का दृष्टिकोण क्या है?
- "आत्मत्राण" कविता से कोई दो पंक्तियाँ लिखिए और उनका अर्थ समझाइए।

उत्तर कुंजी

- कवि प्रभु से आत्मबल और साहस की सहायता की कामना करते हैं।
- कवि विपदाओं से बचने के बजाय उनका सामना करने का पक्षधर है।
- "कभी न विपदा में पाऊँ भय" का अर्थ है कि विपत्ति में डर न लगे।
  "दुख को मैं कर सकूँ सदा जय" का अर्थ है कि दुःख पर हमेशा विजय प्राप्त कर सकूँ।

शब्दावली

- विपदा : मुसीबत, संकट।
- करुणामय : दयालु।
- सांत्वना : तसल्ली देना।
- पौरुष : साहस, शक्ति।
- त्राण : रक्षा, बचाव।
- अनामय: स्वस्थ।
- वंचना : धोखा देना।
- संशय : संदेह।

Prepzy